

## ● पढ़ो और गाओ :

### २. जीवन

जीवन है चलने का नाम ।  
करना कभी नहीं विश्राम ॥



घड़ी सदा टिक-टिक करती,  
रुकने का नहीं लेती नाम ।  
घड़ीनुमा सब आगे बढ़ना,  
सूरज-सा नित ऊपर उठना ।  
कण-कण में अपनत्व देखकर,  
सबको दिल से करो प्रणाम ॥



लहराना सागर से सीखो,  
आसमान-सा हृदय विशाल ।  
सहनशील बन धरती जैसे,  
मिलजुल करते जाना काम ।  
जो चलता वह आगे बढ़ता,  
मेहनत कर पाता पद नाम ॥

माँ जैसी हो मीठी बोली,  
मन में सच्चे उच्च विचार ।  
अपने जैसा सबको जानो,  
सेवा का कर लो सुविचार ।  
जीवन है चलने का नाम,  
करना कभी नहीं विश्राम ॥



- डॉ. कुलभूषणलाल मखीजा



१. अपनी दिनचर्या बनाओ और सुनाओ ।

२. तुम्हारी माँ तुम्हारे लिए क्या-क्या करती हैं, बताओ ।



- विद्यार्थियों को साभिनय गीत सुनाएँ और उनसे दोहरवाएँ । सामूहिक अभिनय के साथ गाने के लिए कहें । लयात्मक शब्दों का अनुवाचन कराएँ । कविता की लयात्मकता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए उचित लय में गीत गवाएँ ।